रात्रि क्लास 4-10-68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?

देहती को घेराव करना है। वास्तव में यह जो त्रिमूर्ति और झाड़ का चित्र है यह है मुख्य फारेनर्स के लिये। इस पर उन्हीं को समझाना अच्छा है। जब कोई फारेनर आते हैं उनको संगम युग की नालेज भी जरूर दे पड़ें। यह तो नई दुनिया और पुरानी दुनिया का संगम है। यह है मुख्य बात। एक तरफ हैवीन है, एक तरफ हेल। हेल को हैविन तो गाड फादर ही बनायेंगे। यह पुरानी दुनिया है, वह नई दुनिया है। नई दुनिया फादर ही स्थापन करेंगे। फादर को जरूर बाडी(शरीर) चाहिए। वह बाडी भी ऊपर में खड़ी है। समझाना होता है फादर एडम द्वारा यह विष्णुपुरी स्थापन करते हैं। इन द्वारा यह हैविन का मालिक बना है। विष्णु का दो रूप है। लक्ष्मी। स्थापना करने वाले ऊपर में खड़े हैं। यह है आदम। पहला आदम कहेंगे ना। कृष्ण को एडम नहीं समझते हैं। तो इस तरह समझाना चाहिए यह है एडम। यह पैराडाईज का मालिक है। जो फिर 84जन्म पिछाड़ी में यह एडम बनते हैं। बाप इन एडम का रथ लेते हैं। बच्चे समझते तो होंगे। पहले2 है यह लक्ष्मी। फिर है राम। फिर और और धर्म हैं। अभी संगम तो है। गाड फादर सब सभी को लिबरेट कर ले जावेंगे गाईड बनकर। यह हैविन की स्थापना करते हैं। यह समझा सकते हो आबू में ही हैविन की यादगार है। एडम कैसे अपने बच्चों के सहित हैं, प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं ना। प्राचीन भारत का योग सीख रहे हैं हैविन स्थापन करने लिये। तो उनको समझाना पड़े। बापएडम क्रेतन में आते हैं। सारे विश्व को सदगति करते हैं। हैविन में हेल तो हो न सके। उनका विनाश सामने खड़ा है। ऐसे ऐसे समझाना होता है। बाप हेल एवं की सदगति करते हैं। बाप सभी को लिबरेट करते हैं। अभी सभी आयरन एज में हैं फिर बाप लिबरेट कर स्वीटहोम ले जाते हैं। अभी यह समझानी तो सभी के लिये है। बड़ी ही सहज सी रीति से समझाई जा सकती है। परन्तु बुधि में बैठता नहीं बैठता है क्योंकि अभी तो टाईम है नहीं। इस समय तक जो सर्विस चल रही है एक्युरेट। बच्चों को खड़ा करने लिये कहते हैं। बाकी बाप तो समझते हैं जो कुछ चलता है आता है बिल्कुल ठीक है। आगे के लिये अच्छी रीति पुरुषार्थ करो। सर्विस तो बहुत बच्चे करते ही रहते हैं। बच्चे समझ गये हैं हमको सर्विस को बढ़ाना है। बाबा खुद कहते हैं घेराव डालो। तो छूश्रेस्ट टूयेस्ट से आवाज़ निकले। एक भी आवाज़ करे तो उनके पिछाड़ी बहुत आने लग पड़ेंगे। उनकी आवाज से बहुत ही आवाज हो जावेगा। क्योंकि सन्यासी लोग हठयोगी को जाकर ठगते हैं। इसमें कृप्शन, एडल्टेशन इतनी है जो भारत का खाना ही खराब कर दिया है। भारत में आबादी और बरबादी। उत्थान और पतन। तुम लिखते हो परन्तु समझते थोड़े ही हैं। हू बहू जैसे बन्दर। देहली साक्षी के म्युजियम में एम0 पी0 आदि बहुत आते हैं। अभी 175 आये हैं। प्रभाव पड़ता है यह ब्रह्माकुमारियां अच्छा काम करती हैं। यह नहीं समझते हैं कि असल प्युरिटी थी जो अब नहीं है। बाप समझाते हैं स्थापना तो होनी ही है। बच्चे समझते हैं कनाट प्लेस में बड़े2 बहुत आते हैं और आवेंगे तो आवाज होगा। इस समय तक जो होता आया है कल्प पहले भी हुआ है। जो पास्ट हो गया बिल्कुल एक्युरेट। हार जीत तो होती ही है। देखा जाता है दोनों बराबर है। कितने माया से हार खाते हैं। पुरुषार्थ भी जो होता है कल्प पहले मिसल। बच्चे की आईडिया बहुत अच्छी है। यह हो जावेगी बड़ों की सर्विस। फिर सरीनों की सर्विस पीछे। थोड़ा ठहराया जाता है। रमेश जाकर पास कर के आवे तो बाबा का कोई मना नहीं है। सर्विस करने वाले भी अच्छे चाहिए। मैदान में आना होगा। कहते हैं ना ब्रह्माकुमारियां मैदान में आवे। कनाटप्लेस कोई कम थोड़े ही है। शिव बाबा के बच्चों का भण्डारा तो है ही।

अच्छा मीठे2 बच्चे सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।